

सोने के सिक्कों वाली बत्तख

मेक्सिको की लोककथा



लोरीन, हिंदी : विदूषक

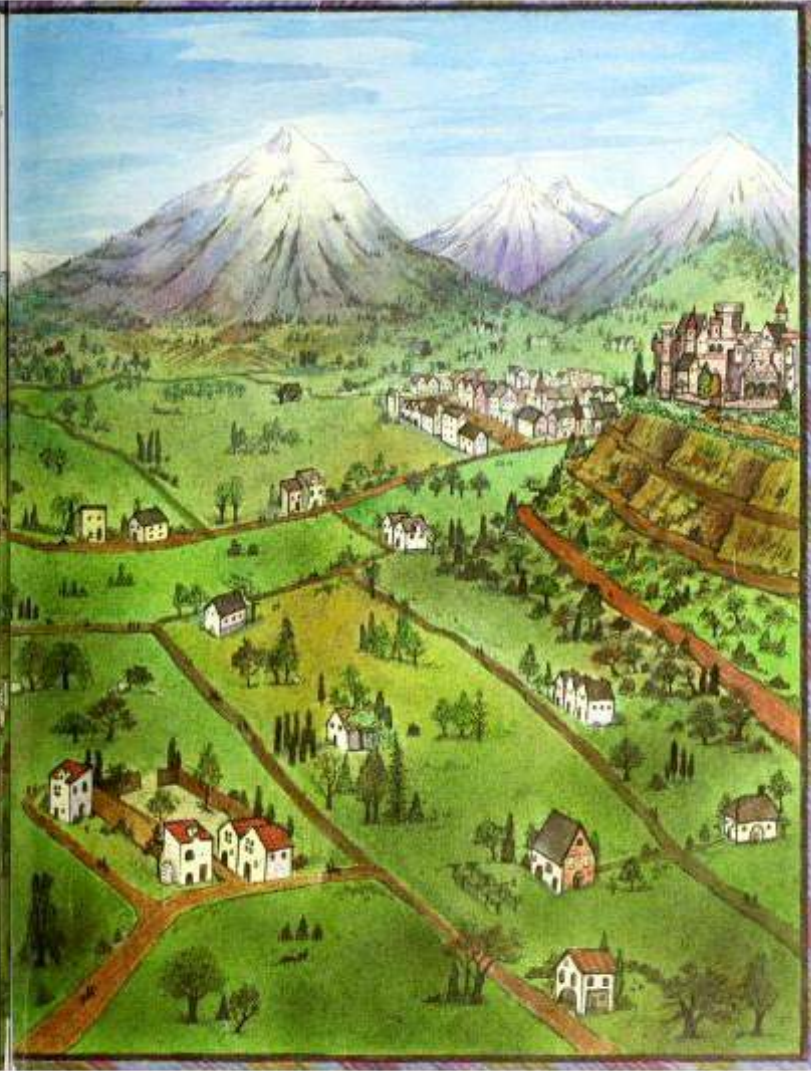
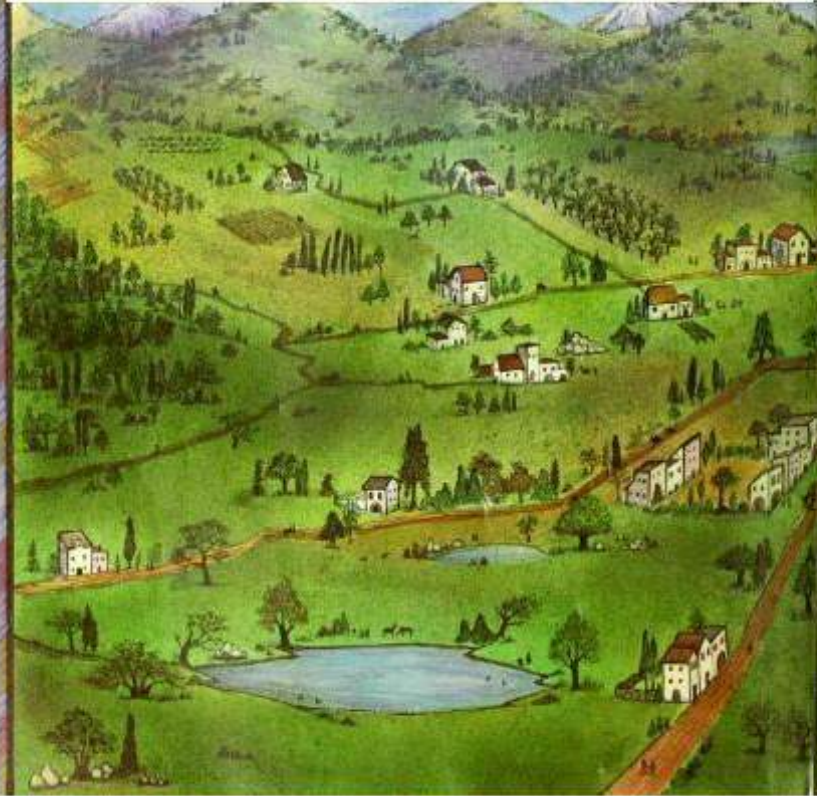
सोने के सिक्कों

वाली बत्तख

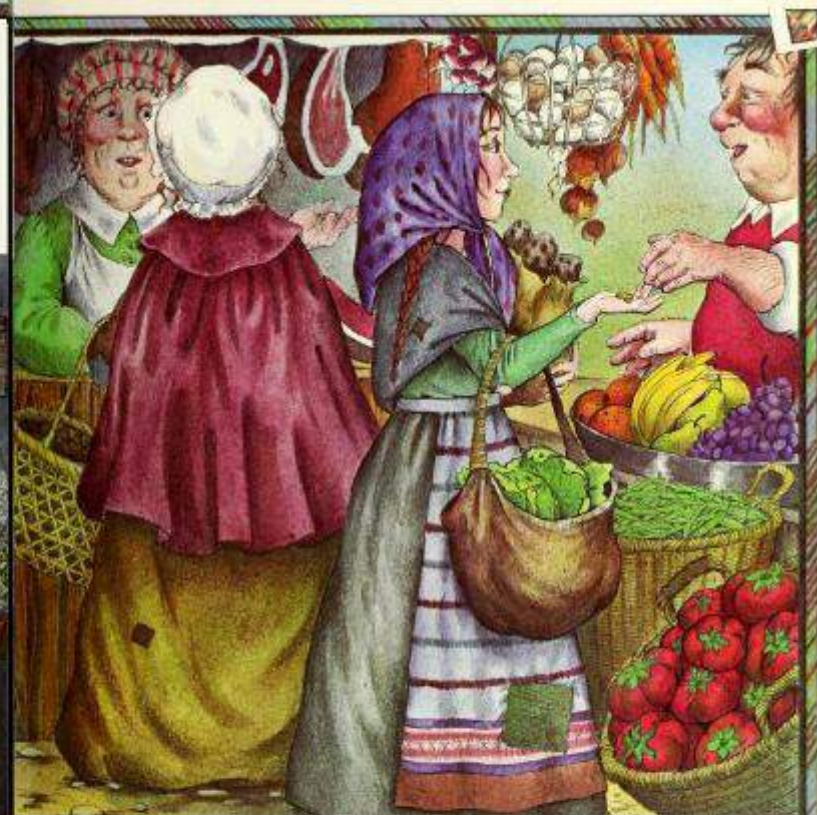
मेक्सिको की लोककथा



पुराने ज़माने में एक बहुत दूर के देश में एक छोटा
सा गाँव था. वहाँ एक सुन्दर राजकुमार राज करता था.
उसी गाँव के किनारे पर एक घर में दो बहनें - लिल्ला
और लोला रहती थीं.



बहनें बहुत गरीब थीं. दो जून खाने के लिए वो सुबह से शाम तक पटसन बुनती थीं. जब उनके पास काफी पटसन हो जाती तब वो बाज़ार में जाकर उसे बेच देती थीं.

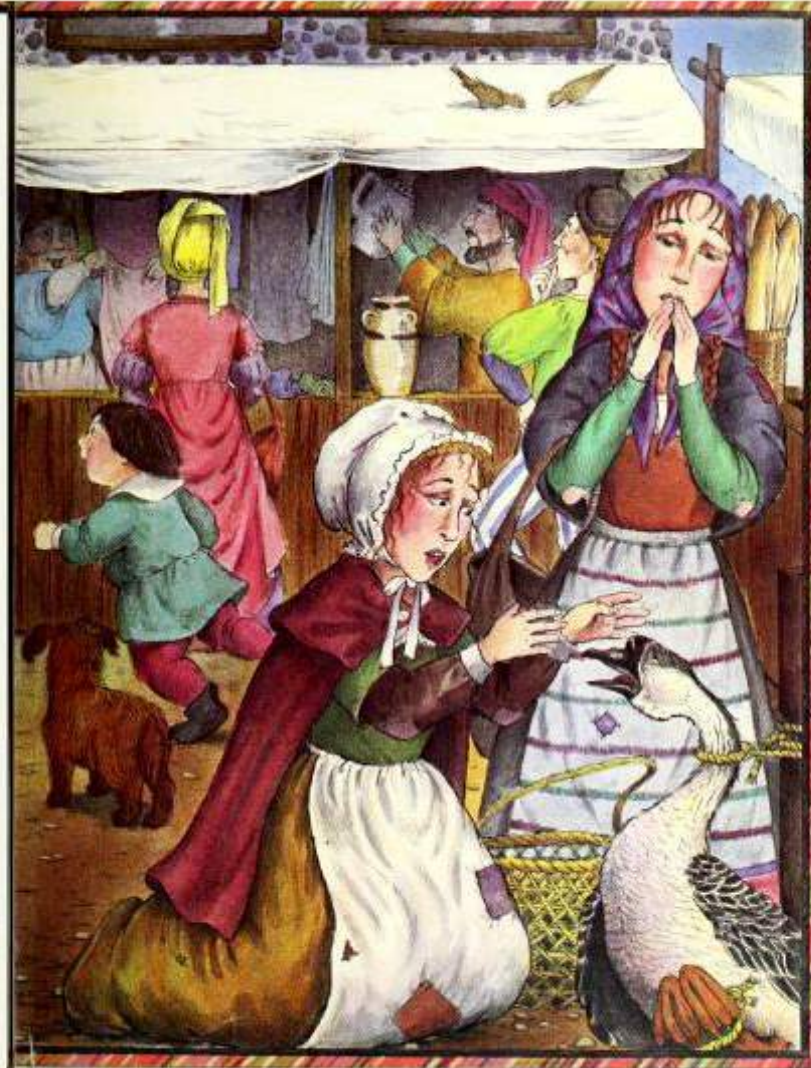


मेहतन से कमाए उन पैसों से वो कुछ आलू, पत्तागोभी और एक मांस का टुकड़ा खरीदती थीं.

उस सामान से वो एक बड़े बर्तन में सूप बनाती थीं. उस सूप से उन्हें पूरे हफ्ते काम चलाना पड़ता था - जब तक बेचने के लिए उनके पास नया पटसन तैयार न हो.

इस तरह से गरीबी में उनकी ज़िन्दगी घिसटती चल रही थी. हफ़्तों, महीनों इसी तरह बीते. फिर एक दिन सुबह को बाज़ार में उन्हें एक बत्तख दिखाई दी. उसे बड़े ज़ालिम तरीके से बाँधा गया था. बत्तख का मालिक उसे बेंचना चाहता था.

उस बत्तख की मुसीबतें देखकर उन दोनों सहृदय बहनों का दिल पसीज गया. फिर उन्होंने सब्ज़ी की बजाए वो बत्तख खरीद ली.



लिल्ला और लोला ने उस बत्तख को अपनी टोकरी में रखा और फिर वो सड़क पकड़ी जो उनके घर की तरफ जाती थी.



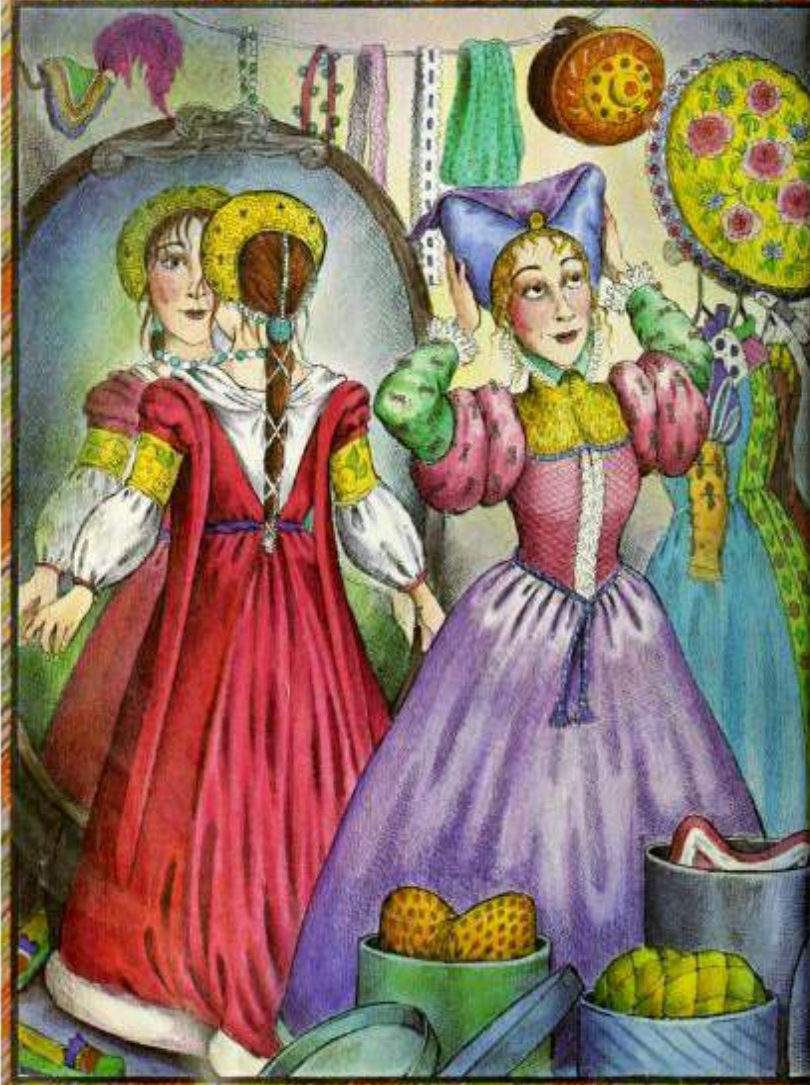
उन्होंने उस बत्तख को खूब खिलाया-पिलाया और उसकी खूब खातिरदारी की. बत्तख उनके साथ ही पलंग पर सोती थी - जैसे वो उनकी छोटी बहन हो.

इस तरह दिन बीतते गये. दोनों बहनों पटसन की बुनाई, कताई, बिक्री, चौके-चूल्हे और सफाई में व्यस्त रहती थीं. पर बत्तख के होने से अब उनकी सूनी ज़िन्दगी में एक नयी खुशी आ गई थी.



एक दिन दोनों बहनों को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब बत्तख गोबर की बजाए सोने के सिक्के गिराने लगी! कुछ ही दिनों में इतने सोने के सिक्के इकट्ठे हो गये कि उनसे उनका पूरा संदूक भर गया.





अब दोनों बहनों के पास सुन्दर कपड़ों
और जेवर खरीदने के लिए खूब पैसे थे.
बाहर जाते समय वो अब फैसी हैट्स और
महंगे जूते पहनती थीं. अब दोनों बहनें
सिर उठाकर शान से चलती थीं.

बाज़ार में अब वो सबसे महंगा भोजन खरीदती थीं -
सबसे महंगा मीट और सबसे स्वादिष्ट पेस्ट्री. शहर के कुछ
लोग दोनों बहनों की धन-दौलत के देखकर जलने लगे थे और
उनकी नई अमीरी का कारण जानने के इच्छुक थे.



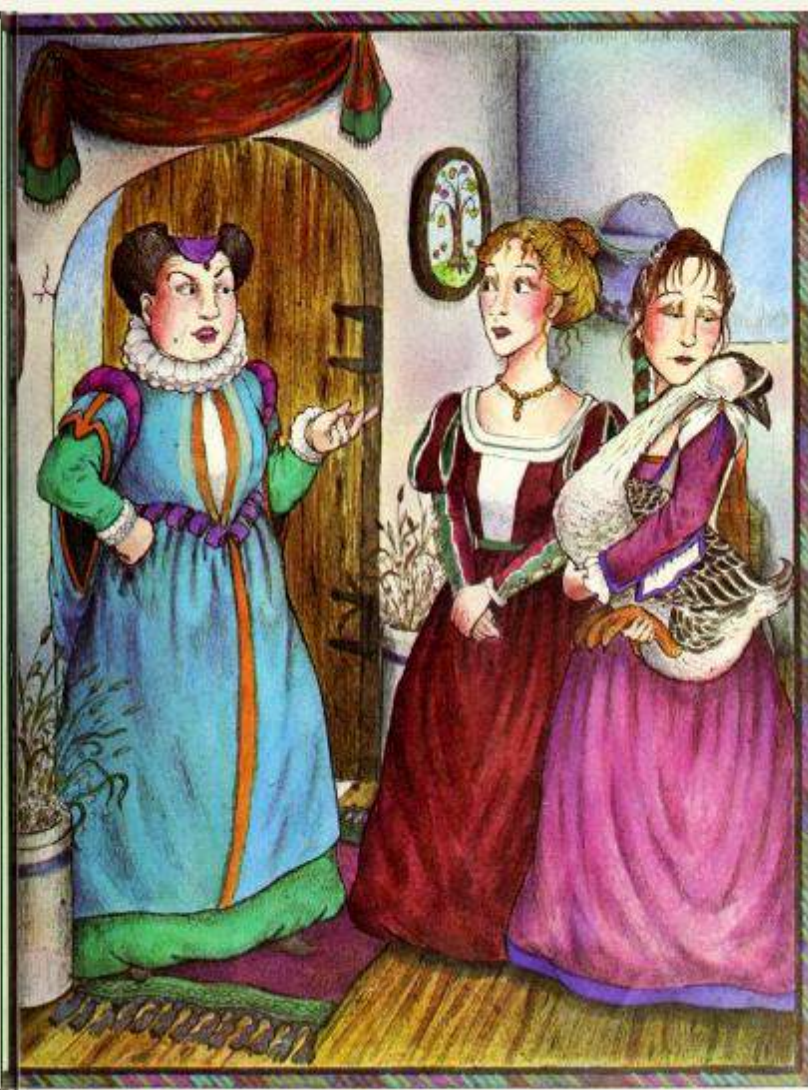
फिर एक दिन कुछ औरतें असलियत जानने के लिए
उन बहनों के घर पर छिपकर जासूसी करने आईं.



उन्होंने देखा किस तरह लिल्ला और लोला ने ज़मीन पर
एक सफ़ेद चादर बिछाई. फिर उस पर बत्तख से चलने को
कहा. चादर पर चलते हुए बत्तख ने सोने के सिक्के गिराए.
फिर बहनों ने सिक्कों को उठाकर संदूक में रख दिया.

फिर अगले दिन उनमें से एक औरत दोनों बहनों के मिलने आई. वो अंडे सेने के बहाने उनकी बत्तख को कुछ दिनों के लिए उधार मांगने आई थी.

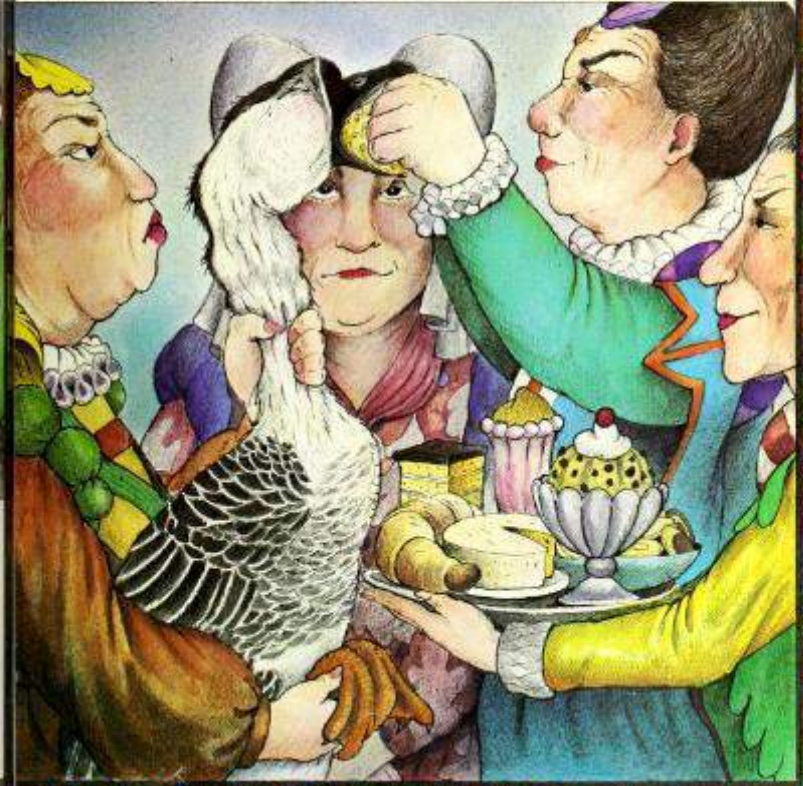
दोनों बहनें दयालु थीं और वे नहीं चाहती थीं कि कोई उनपर शक करे इसलिए उन्होंने अपनी बत्तख उधार दे दी. उस औरत ने कुछ दिनों में बत्तख को लौटने का वादा भी किया.



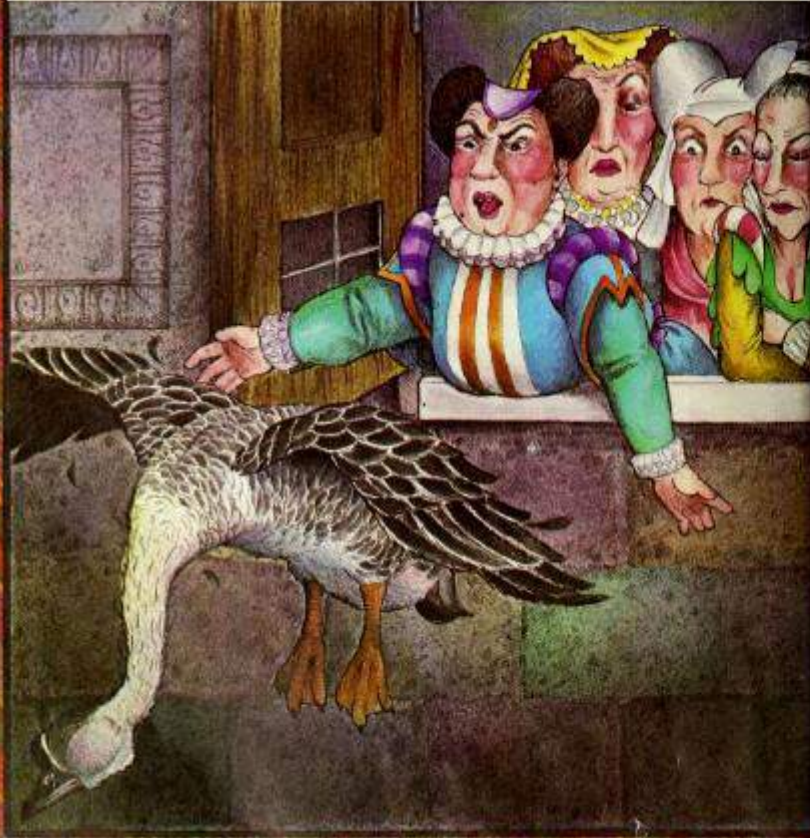


फिर औरत उस बत्तख को अपने घर ले गई. वहां पर बाकी औरतें बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थीं. उन्होंने फर्श पर साफ़ चादर बिछाई और फिर डरा-धमकाकर बत्तख को उसपर चलने को कहा. उन्हें तब बेहद आश्चर्य हुआ जब सोने के सिक्कों की बजाए बत्तख ने चादर पर अपना गोबर गिराया.

यह देखकर उन औरतों को लगा कि उन्हें बत्तख को कुछ विशेष भोजन खिलाने चाहिए जिससे कि उसका गोबर सोने के सिक्कों में बदल जाए. फिर उन्होंने एक-से-एक बढ़िया पकवान बनाए और उन्हें ज़बरदस्ती बत्तख के मुंह में ठूंसे.



पर इससे स्थिति और बिगड़ी और बत्तख का पेट खराब हो गया. यह देखकर उन औरतों को इतना गुस्सा आया कि उन्होंने उस बत्तख की गर्दन मरोड़ डाली. जब उन्हें लगा कि वो मर गई तब उन्होंने बत्तख को खिड़की के बाहर सड़क पर फेंक दिया.



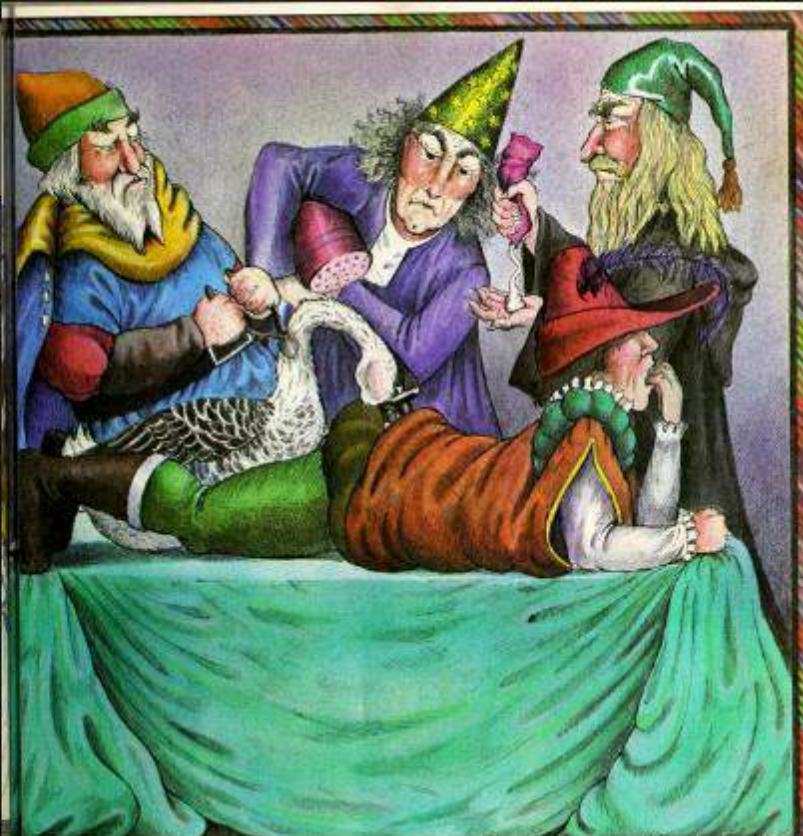
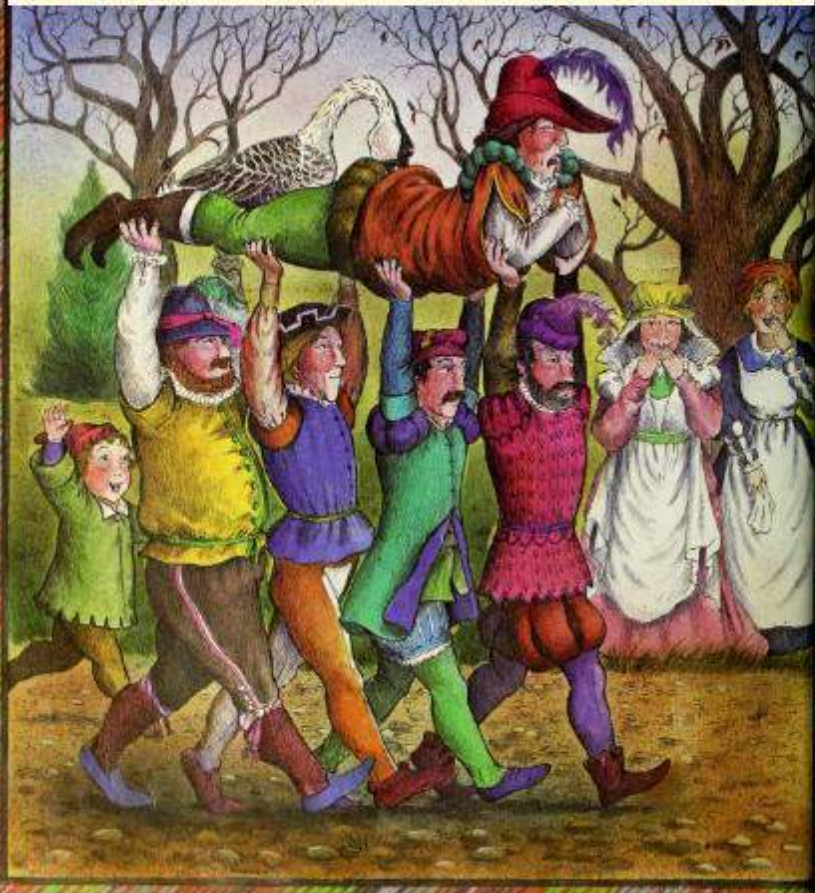
इत्तिफाक से उसी समय सड़क से राजकुमार गुज़र रहा था. राजकुमार किसी ज़रूरी काम से जा रहा था. उसके साथ में कई नौकर-चाकर भी थे.



दरअसल वो बत्तख मरी नहीं थी. पर उसके साथ जो गलत बर्ताव हुआ उससे वो बेहद गुस्सा थी. जैसे ही राजकुमार वहां से गुज़रा वैसे ही बत्तख ने उसे पीछे से काट लिया. बत्तख राजकुमार को पकड़े रही, उसने उसे बिल्कुल नहीं छोड़ा.

राजकुमार दर्द से बहुत चीखा-चिल्लाया. उसके नौकरों-चाकरों ने बहुत खींचने की कोशिश की पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ. बत्तख ने राजकुमार को काटे रही.

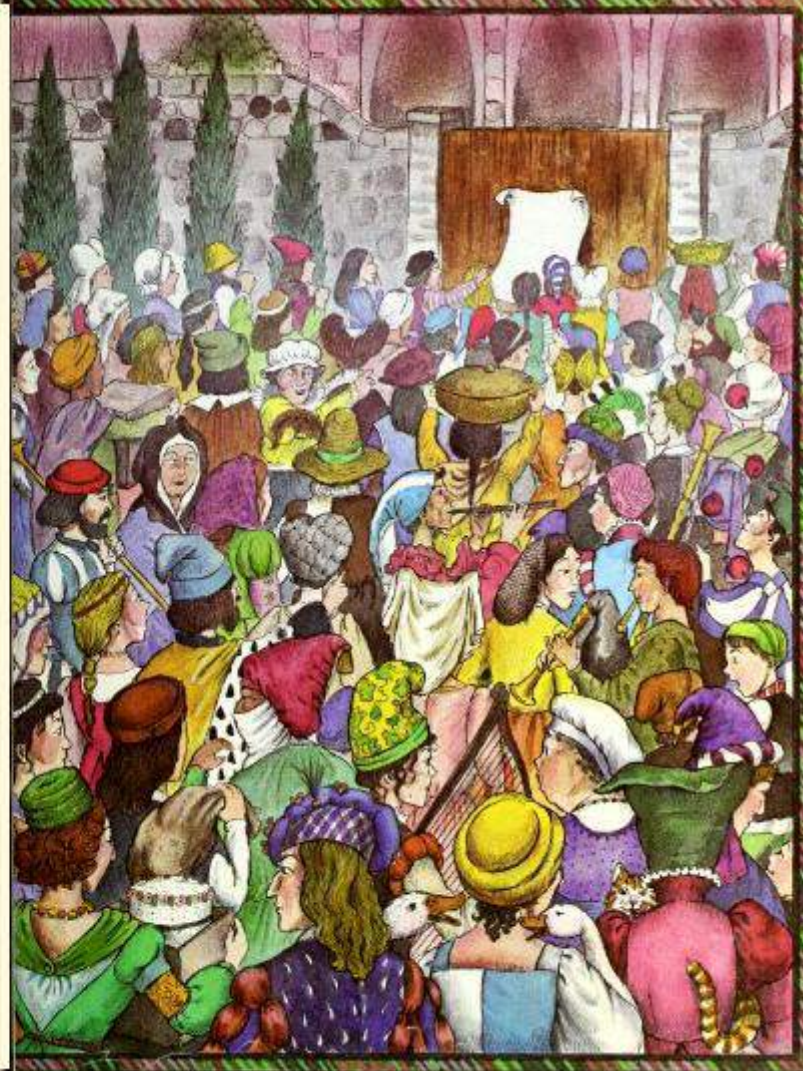
अंत में राजकुमार के आदेश पर नौकर उसे महल में वापिस ले गये.



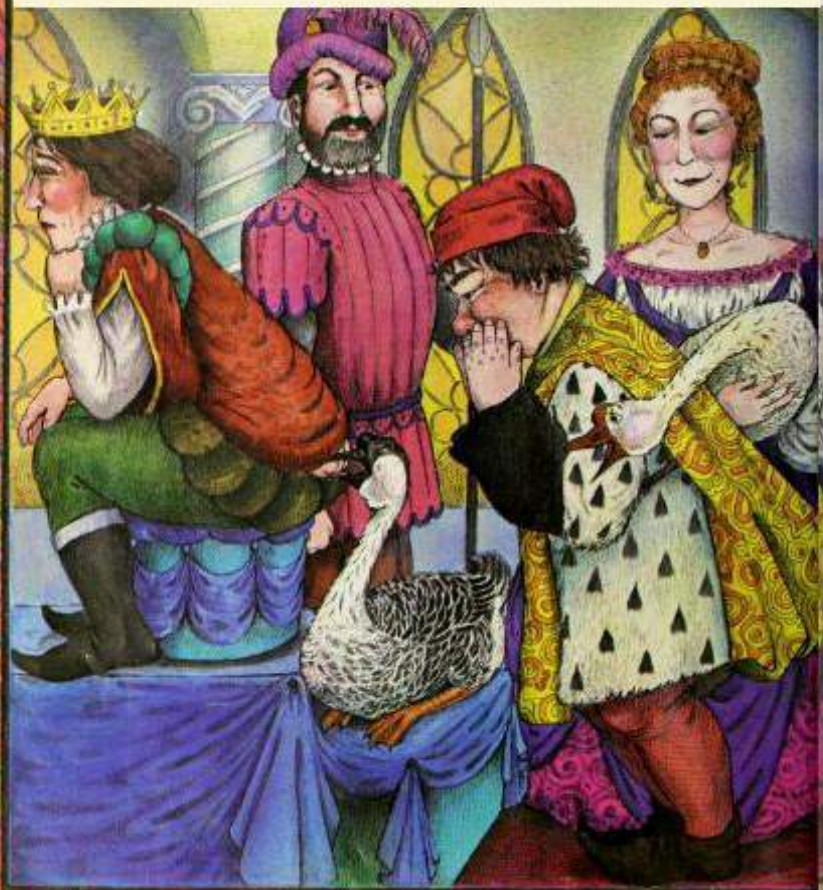
महल में दुनिया भर के डॉक्टरों और बुद्धिमान लोगों को बुलाया गया, जो बत्तख की गिरफ्त को कम करवा सकें. उन्होंने तमाम मलहम और इलाज किये पर उनसे भी कोई फायदा नहीं हुआ.

जब राजकुमार को लगा कि बत्तख उससे जोंक
जैसे चिपक गई थी और वो उसे कभी छोड़ेगी नहीं.
तब उसने यह ऐलान करवाया: “जो भी मुझे इस
बत्तख से निजात दिलवाएगा – वो अगर मर्द होगा
तो मैं उसे अपनी आधी जागीर दे दूंगा, और अगर
वो महिला होगी तो मैं उससे शादी कर लूँगा.”

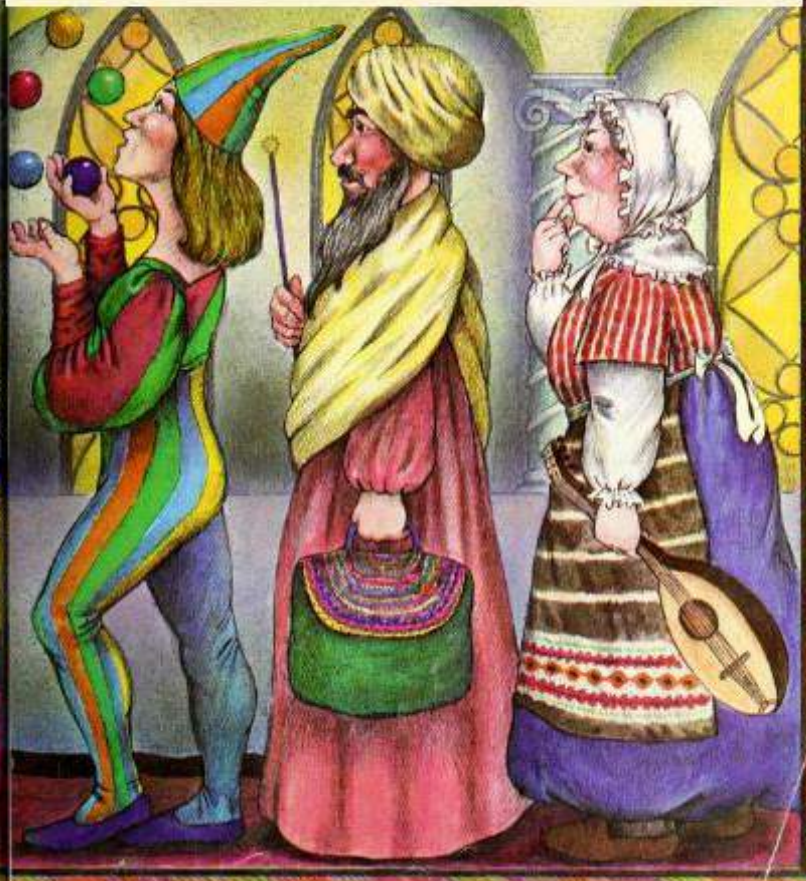
जब शहरवासियों ने यह ऐलान सुना तो फिर
तो महल के दरवाज़े पर लोगों की भीड़ लग गई.
लोग, सब तरह के इलाज ढूँढने लगे.



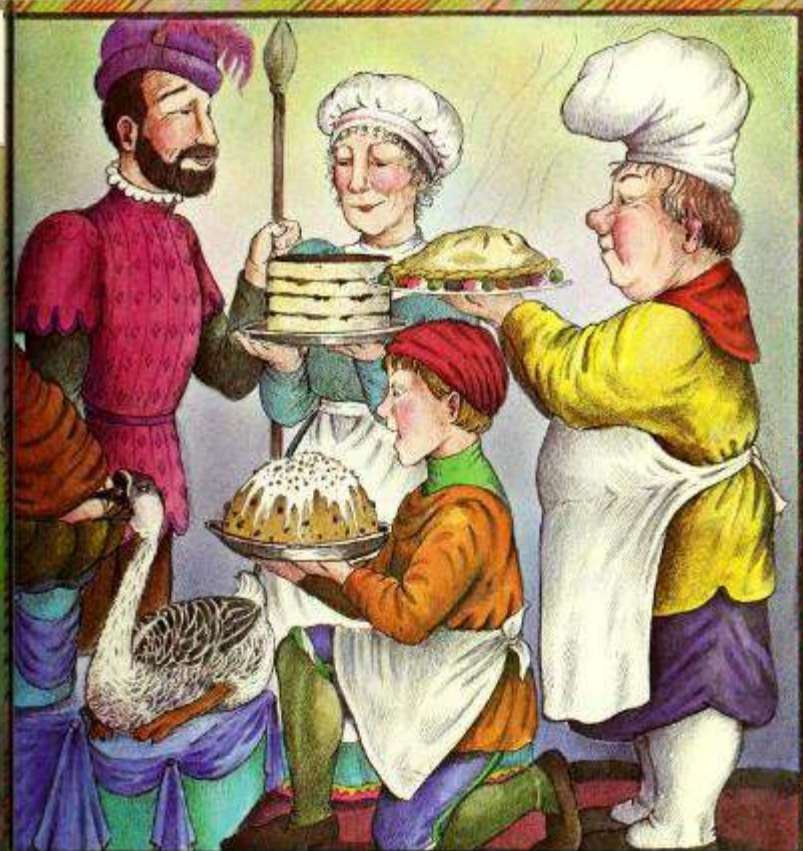
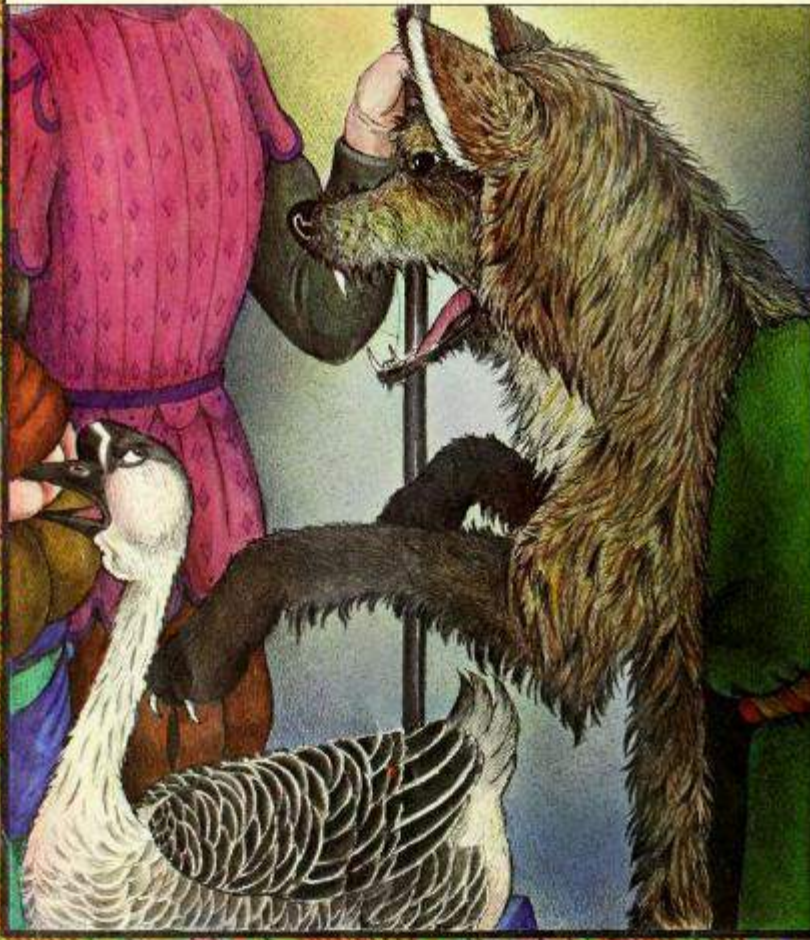
कुछ लोगों ने नर-बत्तखों की आवाज़ निकालकर
बत्तख का ध्यान बंटाना चाहा.



कुछ ने जादू-टोने किए. कुछ ने बच्चों की लोरियां
सुनाकर बत्तख को सुलाना चाहा.

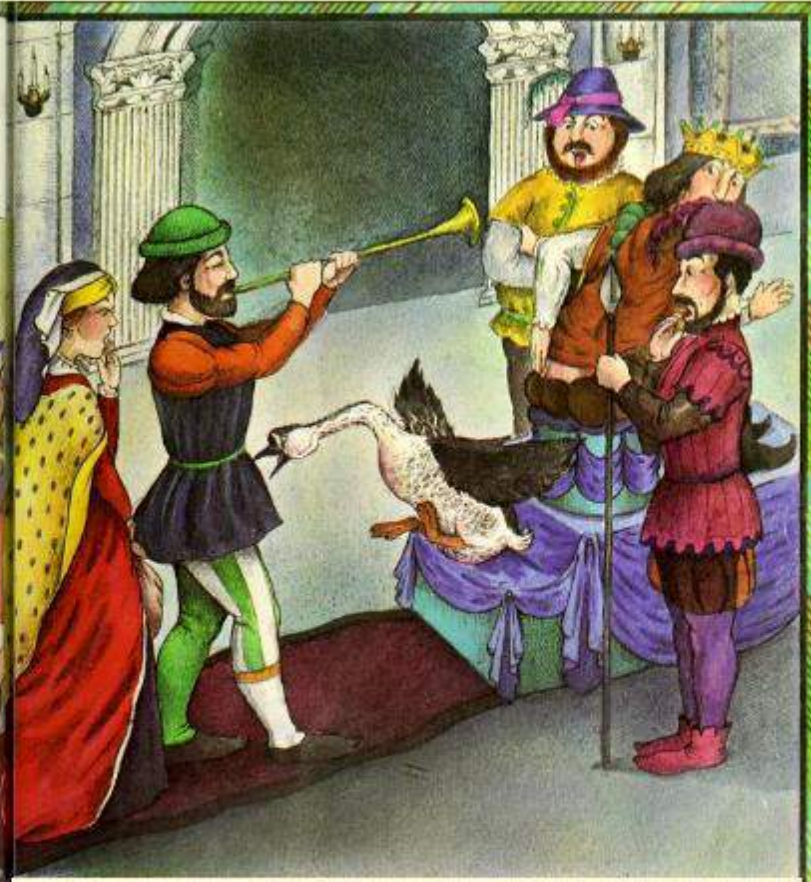
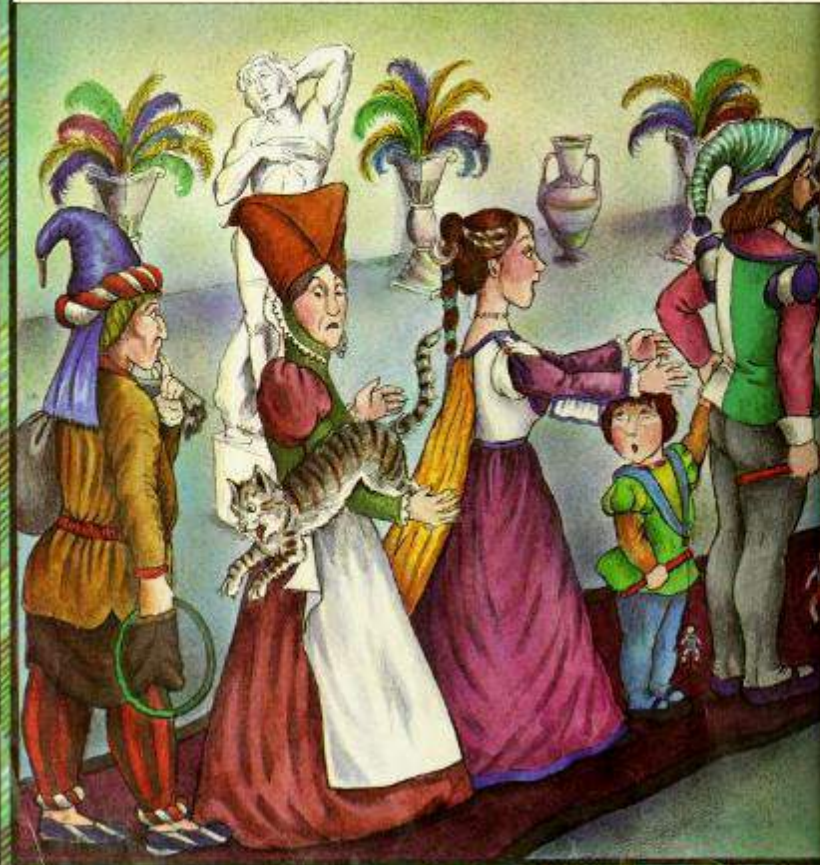


कुछ लोगों ने बत्तख को डराने की कोशिश भी की.



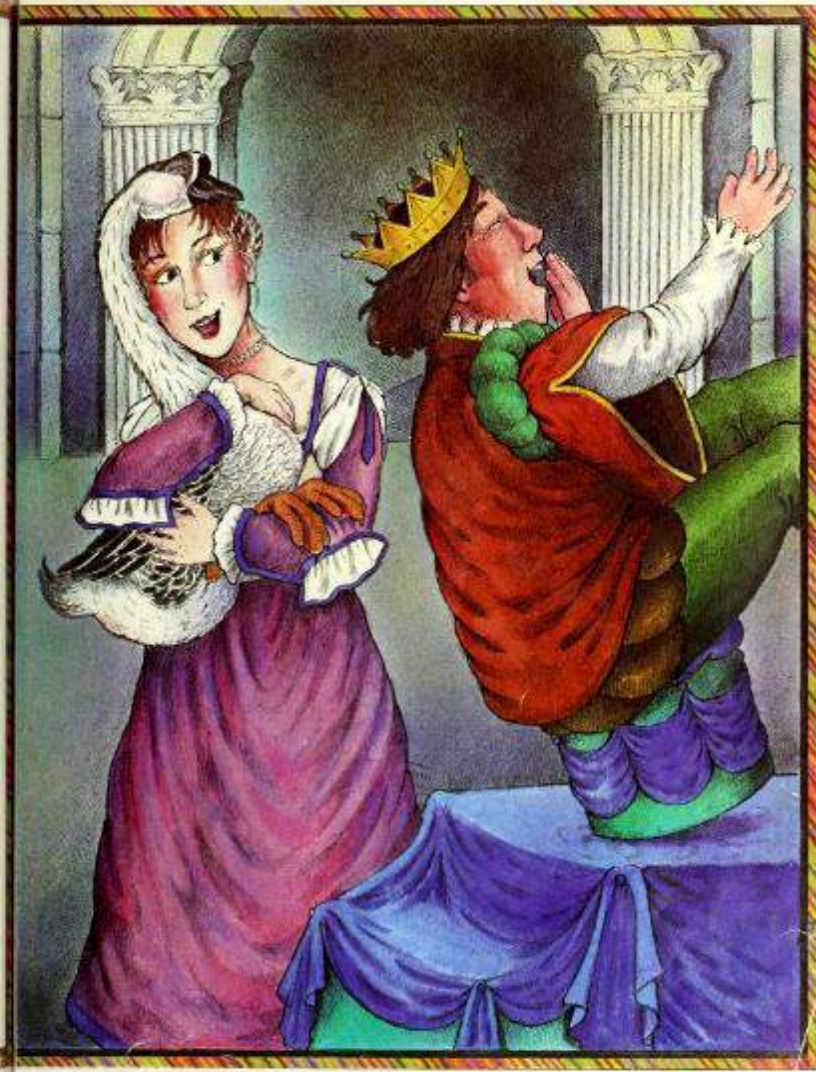
बत्तख को बढ़िया से बढ़िया पकवान खाने को दिए गये. पर इससे कुछ फर्क नहीं पड़ा. बत्तख पूरे ज़ोर से राजकुमार को पकड़े रही.

अंत में उस भीड़ में छोटी बहन लोल्ला भी महल में गई.
जब उसने बत्तख को देखा तो वो उसे तुरंत पहचान गई. बत्तख
को देखकर लोल्ला के मुंह से खुशी की एक चीख निकली.

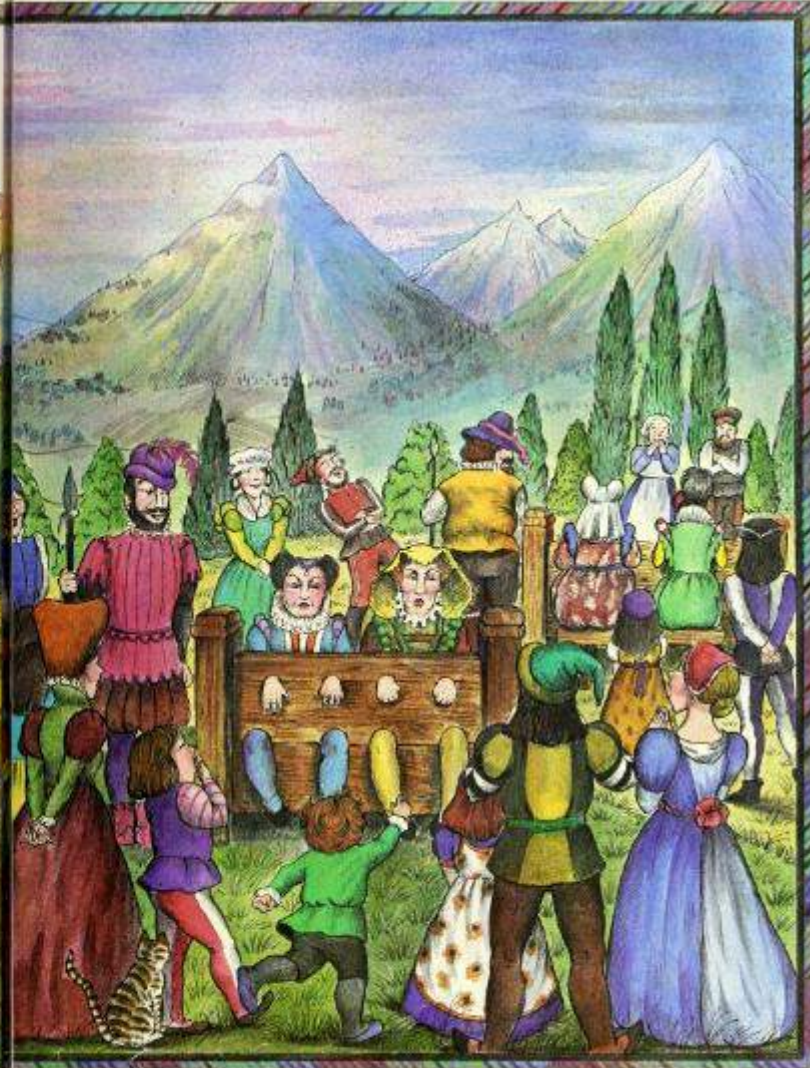
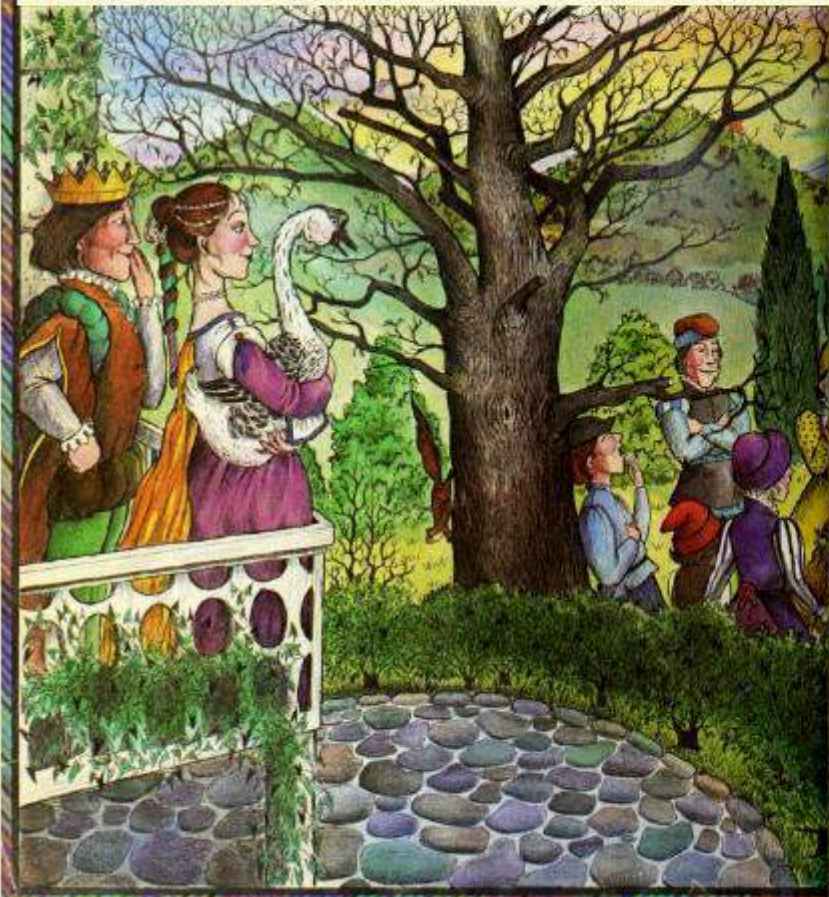


जब बत्तख ने अपनी पुरानी दोस्त की चीख सुनी तब
वो तुरंत राजकुमार को छोड़कर अपनी दोस्त से मिलने दौड़ी.

राजकुमार ने जब यह घटना देखी तो उसे यकीन ही नहीं हुआ. फिर उसने लोल्ला से पूरी कहानी सुनाने को कहा. लोल्ला ने उसे शुरू सा आखिर तक की पूरी कहानी सुनाई. जब उसने पड़ोसी औरतों की जलन और बत्तख की अकलमंदी की कहानी सुनाई तो राजकुमार बहुत हंसा.



उसके बाद राजकुमार ने उन जलने वाली औरतों की पूरे शहर में परेड कराई, जिससे लोग उनकी असलियत को जान सके.



उसके बाद बड़ी धूमधाम से राजकुमार और लोल्ला की शादी हुई. दहेज़ में राजकुमार ने सोने के सिक्के गिराने वाली बत्तख को खुशी से स्वीकार किया.



इस शादी के कुछ दिनों बाद लोल्ला की बहन लिल्ला की शादी एक अन्य राजकुमार से हो गई. उसके बाद उन सभी ने बड़ी खुशी से अपने दिन बिताए.

